देख लो आज केलों को जी भर के....

हो सकता है आज से 10-12 साल बाद हमारा चिर परिचित केला हमसे हमेशा-हमेशा के लिए दूर हो जाए। समय ज़्यादा नहीं है अगर इन्हें बचाने की कोई सूरत है तो हमें आज अभी से उस पर जुट जाना चाहिए।

केला विश्व की सबसे पुरानी फसल है। कृषि वैज्ञानिकों का मानना है कि अंतिम हिम युग की समाप्ति के बाद पहली बार केला दक्षिण पूर्वी एशिया के जंगलों में उगाया जाने लगा। लगभग 10,000 साल पहले दक्षिण पूर्व एशिया में ही केले का पहला फल चखा गया था। वास्तव में जंगली केले का पेड़ एक विशाल झाड़ी होती है जिसका फल सख्त बीजों वाला होता है। इसे खाया नहीं जा सकता। ऐसा लगता है कि समय-समय पर उस समय के शिकारी-संग्रहकर्ता लोगों को कोई केला ऐसा मिल जाता था जिसमें बीज नहीं होते थे। यह बीज रहित केला एक उत्परिवर्तन का फल था। इसकी प्रत्येक कोशिका में गुणसूत्रों की सामान्य दो प्रतियों की जगह तीन प्रतियां थीं। इस गलती से बीजों और परागकणों का सामान्य विकास थम गया। और ये बेचारे पौधे बीज रहित अनुर्वर रह गए। केले के गूदे में दिखाई देने वाली काली लकीरें इन्हीं बीजों के अवशेष हैं। लैंगिक प्रजनन के अभाव में तब से इसका विकास थम गया है। केले में जिनेटिक विविधता का अभाव है जिसके कारण ये कीटों व रोगों से लड़ पाने में असमर्थ हो गए हैं। वैज्ञानिक समुदाय ने केले की ज़रूरतों की बेहद अनदेखी की है। केले का लैंगिक प्रजनन समय और पैसे दोनों के हिसाब से महंगा है।

पहले पाषाण युग के लोगों ने इन केलों की कलमों से नए पेड़ लगाए। आज जिन केलों का हम मज़ा लेते हैं वे भी उन्हीं कलमों के वारिस हैं। आज आधुनिक केलों की पीली, लाल और हरी किस्में अलग-अलग अनुर्वर केलों का सालों-साल से चला आ रहा जस का तस स्वरूप है। यही एकरसता, जिनेटिक विविधता का अभाव इसे रोगों की पहली पसंद बना देता है। पीढ़ी दर पीढ़ी जीन का नए क्रमों

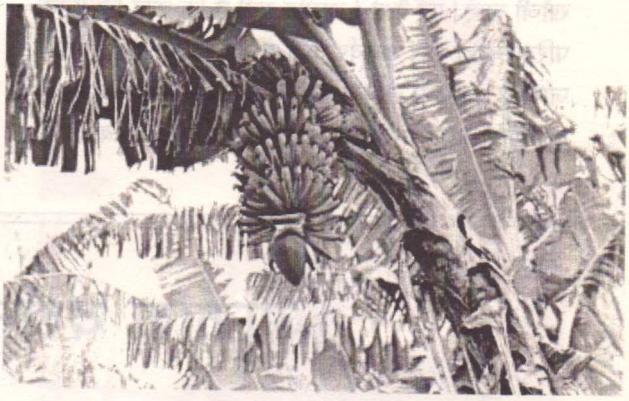

में जुड़ना जिनेटिक आधार को व्यापक बनाता है। इससे रोगों से भिड़ने की ताकत मिलती है। लेकिन एक ही किस्म को बार-बार उगाने से रोग प्रतिरोधकता कम होती जाती है।

1950 के दशक तक केले की ग्रास मिसेल किस्म बहुत चलती थी। वह देखने और खाने में आज के केले से हर तरह से बेहतर थी। लेकिन मिट्टी में पाई जाने वाली एक फफूंद के सामने वह पिट गया। और मिट्टी में एक बार फफूंद आ गई सो आ गई। केला उगाने वाले जगह बदलते रहे और फफूंद को भी फैलाते रहे। अंततः कोई साफ जगह बाकी न रही। जगह खत्म हुई तो केला भी चल दिया।

इसके बाद केवेन्डिश केला लोकप्रिय हुआ। दुनिया का लगभग 85 प्रतिशत केला कटिबंधीय क्षेत्रों में उगाया जाता है। इसकी कोई बारह किस्मों बोई जाती हैं - तलने, उबालने, चटनी, आटा, जिन बनाने के लिए अलग-अलग किस्में। इसके अलावा सौंदर्य प्रसाधन, डाई, हथकरघा आदि में भी इसका प्रयोग होता है।

एशिया और अफ्रीका में लगभग 50 करोड़ लोग आजीविका के लिए केले पर निर्भर हैं। युगांडा में एक तिहाई कृषि योग्य ज़मीन पर केला उगता है।

अब खबर है कि ब्लैक सिगेरोटा नाम की एक फफूंद